



॥ श्री गङ्गा क्षमा प्रार्थना ॥
॥ ॐ जय गंगे माता ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री गङ्गा क्षमा प्रार्थना ॥

॥ ॐ श्री गङ्गायै नमः ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा।
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व।
जय जय करुणामयी श्रीगङ्गे मातः॥१॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥२॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां सुरपूजिते॥३॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥४॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसन्ना भव सर्वदा॥५॥
अज्ञानाद् विस्मृतेभ्रान्त्या प्रमादादथवा पुनः।
यत्कृतं तु मया देवि तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि॥६॥
भागीरथि! जगन्माते! जाह्नवि! त्रिपथगामिनि।
पतितपावनि गङ्गे! शरणं मे भवाम्बिके॥७॥
त्वं माता सर्वलोकानां त्वं जीवनप्रदायिनी।
त्वमेव शरणं देवि त्वमेव परमागतिः॥८॥
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां कृपया देवि सर्वपापहरे शिवे॥९॥
त्वत्पादाम्भोजसेवायां भक्तिर्मे निश्चला भवेत्।
अन्तकाले च मे मातर्गङ्गे! स्मृतिरचला भवेत्॥१०॥
अनेन पूजनस्तोत्रजपकर्मणा यद् दोषो जातः।
तत्सर्वं त्वत्प्रसादेन क्षन्तव्यं करुणामयि॥११॥

॥ प्रार्थना ॥

हे माँ गंगे!

यदि मेरे द्वारा पूजन, अर्चन, जप, स्तोत्र-पाठ अथवा आरती में किसी प्रकार की त्रुटि, अशुद्धि या भूल हुई हो तो उसे क्षमा करें। मुझे शुद्ध बुद्धि, निर्मल हृदय, निष्काम भक्ति तथा धर्म के मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करें। मेरे समस्त पाप, दुःख, रोग और क्लेशों का नाश कर अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

॥ समर्पण ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा।
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै।
श्रीगङ्गामात्रे समर्पयामि॥

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"